पंच णव दोण्णि अट्ठा-वीसं चउरो कमेण तेणउदी । तेउत्तरं सयं वा, दुगपणगं उत्तरा होंति ॥22॥

- अन्वयार्थ – ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के (उत्तरा) उत्तर भेद (कमेण) क्रम से (पंच) पाँच, (णव) नौ, (दोण्णि) दो, (अट्ठावीसं) अट्ठाईस (चउरो) चार (तेणउदी) तिरानवे (वा) अथवा (तेउत्तरं सयं) एक सौ तीन (दुग) दो (पणगं) पांच (होंति) होते हैं ॥22॥

कर्म के कुल 148 उत्तर भेद

ज्ञानावरण
5

दर्शनावरण
9

वेदनीय
2

मोहनीय
28

आयु
4

नाम
93 या
103

गोत्र
2

अंतराय
5

www.JainKosh.org

ज्ञानावरण के 5 भेद

मतिज्ञान	श्रुतज्ञान	अवधिज्ञान	मन:पर्यय ज्ञान	केवलज्ञान

को आवृत्त करे या जिसके द्वारा आवृत्त हो, वह है—

मति ज्ञानावरण	श्रुत ज्ञानावरण	अवधि ज्ञानावरण	मन:पर्यय ज्ञानावरण	केवल ज्ञानावरण

www.JainKosh.org

प्रश्न— अभव्य के मन:पर्यय और केवलज्ञान की शक्ति नहीं है। तब उनके ये 2 आवरण नहीं पाए जाने चाहिए ?

उत्तर— द्रव्य-स्वभाव की अपेक्षा अभव्य के भी मन:पर्यय और केवलज्ञान की शक्ति है। पर्याय की अपेक्षा यह शक्ति कभी प्रगटरूप से नहीं परिणमती है। अत: शक्ति को घात करने की अपेक्षा उसके भी दोनों आवरण हैं।

दर्शनावरण के भेद

- चक्षुदर्शन
- अचक्षुदर्शन
- अवधिदर्शन
- केवलदर्शन

को आवरण करे या जिसके द्वारा आवृत्त हो वह है –

- चक्षुदर्शनावरण
- अचक्षुदर्शनावरण
- अवधिदर्शनावरण
- केवलदर्शनावरण

थीणुदयेणुट्ठविदे, सोवदि कम्मं करेदि जप्पदि य ।
णिद्दाणिद्दुदयेण य, ण दिट्ठिमुग्घाडिदुं सक्को ॥23॥

- अन्वयार्थ – (थीणुदयेण) स्त्यानगृद्धि के उदय से (उट्ठविदे) उठाया जाने पर भी (सोवदि) सोता रहता है, (कम्मं करेदि) नींद में ही काम करता है, (जप्पदि) बोलता है ।
- (य) और (णिद्दाणिद्दुदयेण) निद्रानिद्रा के उदय से (दिट्ठिं) दृष्टि (आंखें) (उग्घाडिदुं) उघाड़ने में (ण सक्को) समर्थ नहीं होता ॥23॥

www.JainKosh.org

5 निद्राएँ

स्त्यानगृद्धि

स्त्यान = निद्रा

गृध्यते = प्रकाशित/दीप्त होना

जिसके द्वारा सोते समय वीर्य-विशेष प्रकट होता है, सोते हुए ही उठना-बैठना, रखना-उठाना, बोलना आदि अनेक कार्य करता है, वह स्त्यानगृद्धि है ।

निद्रानिद्रा

नींद के ऊपर नींद

आँखें खोलने में भी समर्थ नहीं हो पाना

पयलापयलुदयेण य, वहेदि लाला चलंति अंगाइं ।
णिद्दुदये गच्छंतो, ठाइ पुणो वइसइ पडेइ ॥24॥

- अन्वयार्थ – (पयलापयलुदयेण) प्रचलाप्रचला के उदय से (लाला वहेदि) मुख से लार बहती है (अंगाइं चलंति) अंग चलते हैं ।
- (णिद्दुदये) निद्रा के उदय से (गच्छंतो ठाइ) चलता हुआ ठहरता है (पुणो वइसइ) पुनः बैठता है और (पडेइ) गिर पड़ता है ॥24॥

www.JainKosh.org

प्रचलाप्रचला

- मुख से लार बहना, सोते समय हाथ-पैर आदि चलना ।

निद्रा

- मद, खेद आदि मिटाने के लिए सोना ।
- चलता हुआ ठहर जाए, बैठ जाये, गिर जाए ।

पयलुदयेण य जीवो, ईसुम्मीलिय सुवेइ सुत्तोवि ।
ईसं ईसं जाणदि, मुहुं मुहुं सोवदे मंदं ॥25॥

- अन्वयार्थ - (पयलुदयेण) प्रचला के उदय से (जीवो) जीव (ईसुम्मीलिय) कुछ-कुछ आँखें खोलकर (सुवेइ) सोता है (सुत्तोवि) सोता हुआ भी (ईसं ईसं) थोड़ा-थोड़ा (जाणदि) जानता है (मुहुं मुहुं) बार-बार (मंदं) मन्द (सोवदे) सोता है ॥25॥

www.JainKosh.org

प्रचला

थोड़े नेत्रों को उघाड़कर सोना ।

सोते हुए भी थोड़ा-थोड़ा जानता है ।

सोता हुआ, जागता हुआ, सोता हुआ — ऐसा बार-बार मंद सोना ।

ये सब निद्राएँ दर्शन गुण का घात करती हैं ।
अत: दर्शनावरण कर्म के भेद हैं ।

वेदनीय के दो प्रकार

सुख के कारणरूप	दुःख के कारणरूप
इंद्रिय-विषयों का अनुभव कराये	इंद्रिय-विषयों का अनुभव कराये
वह साता वेदनीय है ।	वह असाता वेदनीय है ।

जिसके उदय का फल

देवादि गति में शारीरिक, मानसिक सुख की प्राप्तिरूप साता है ।

इस साता को वेदन कराये, वह साता वेदनीय है ।

अनेक प्रकार दु:ख की प्राप्तिरूप असाता है ।

इस असाता को वेदन कराये, वह असाता वेदनीय है ।

.Jaink

मोहनीय कर्म

दर्शन मोहनीय

जो दर्शन (श्रद्धा) गुण का घात करे

चारित्र मोहनीय

जो चारित्र गुण का घात करे

दर्शन मोहनीय कर्म

मिथ्यात्व कर्म

- सत्य मार्ग से पराङ्मुख होना,
- तत्त्वार्थ श्रद्धान का उद्यमी न होना,
- हिताहित विचार में समर्थ न होना,
- ऐसी मिथ्यादृष्टि होने का जो कारण है ।

सम्यक्त्व कर्म

- जिसके उदय में श्रद्धान सम्यक् ही रहता है, पर श्रद्धान में चल-मल-अगाढ़ दोष लगा करते हैं, वह सम्यक्त्व प्रकृति है ।

सम्यग्मिथ्यात्व कर्म

- जिसके उदय से कुछ तत्त्वार्थ श्रद्धान रहे, कुछ मिथ्यात्व रहे — ऐसा मिश्र परिणाम हो, वह सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति है ।

दर्शन मोह - विशेष

बंध की अपेक्षा मात्र मिथ्यात्वरूप एक ही प्रकार का है ।

उदय और सत्ता की अपेक्षा 3 प्रकार का है।

‘इस कर्म में ऐसी विशेषता कैसे हो जाती है?’ उसे कहते हैं —

जंतेण कोद्दवं वा, पढमुवसमसम्मभावजंतेण ।
मिच्छं दव्वं तु तिधा, असंखगुणहीणदव्वकमा ॥26॥

- अन्वयार्थ – (जंतेण कोद्दवं वा) चक्की से दले हुए कोदों के समान (पढमुवसमसम्मभावजंतेण) प्रथमोपशम सम्यक्त्वरूप भावयन्त्र से (मिच्छं दव्वं) मिथ्यात्वरूपी कर्मद्रव्य (असंखगुणहीणदव्वकमा) क्रम से असंख्यातगुणा हीन होकर (तिहा) तीन प्रकार का हो जाता है । अर्थात् मिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व और सम्यक्त्वप्रकृतिरूप तीन में विभाजित हो जाता है ॥26॥

www.JainKosh.org

जैसे

घटी यंत्र के द्वारा

दले हुए कोदों

तंदुल, कण, तुष

इन तीन रूप हो जाते हैं ।

वैसे

प्रथमोपशम सम्यक्त्वरूप भावयंत्र के द्वारा

मिथ्यात्व प्रकृति

मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व

इन तीन रूप हो जाती है ।

इन 3 प्रकृतियों का द्रव्य
(परमाणुओं की संख्या) उत्तरोत्तर असंख्यात गुणाहीन है ।

चारित्र मोहनीय

कषाय वेदनीय

कषाय (16)

अकषाय वेदनीय

- ईषत् - किंचित् कषायरूप है
- क्रोधादिक जैसी प्रबल नहीं है

नोकषाय (9)

www.JainKosh.org

कषाय(16)

- क्रोध
  - अनंतानुबंधी
  - अप्रत्याख्यान
  - प्रत्याख्यान
  - संज्वलन
- मान
  - अनंतानुबंधी
  - अप्रत्याख्यान
  - प्रत्याख्यान
  - संज्वलन
- माया
  - अनंतानुबंधी
  - अप्रत्याख्यान
  - प्रत्याख्यान
  - संज्वलन
- लोभ
  - अनंतानुबंधी
  - अप्रत्याख्यान
  - प्रत्याख्यान
  - संज्वलन

www.JainKosh.org

नोकषाय (9)

हास्य	रति	अरति
शोक	भय	जुगुप्सा
स्त्रीवेद	पुरुषवेद	नपुंसकवेद

अनन्तानुबंधी कषाय

अनन्त + अनुबन्ध

अनन्त = अनन्त संसार का कारण मिथ्यात्व; ऐसे मिथ्यात्व के साथ संबंधरूप करे अथवा

अनन्त = अनन्त संसार अवस्थारूप काल; ऐसे संसार के साथ संबंधरूप करे

वह अनन्तानुबंधी कषाय है ।

अप्रत्याख्यानावरण कषाय

अ + प्रत्याख्यान + आवरण

ईषत् / किंचित् + त्याग = किंचित् त्याग याने अणुव्रत

उस पर आवरण करे, नष्ट करे

उसे अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं ।

प्रत्याख्यानावरण कषाय

प्रत्याख्यान + आवरण

महाव्रतरूप सकल त्याग को + आवरै, नष्ट करे

उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं ।

संज्वलन कषाय

सं + ज्वलन

समीचीन, निर्मल यथाख्यात चारित्र को + दहन करे

उसे संज्वलन कषाय कहते हैं ।

अनंतानुबंधी	अप्रत्याख्यानावरण	प्रत्याख्यानावरण	संज्वलन
तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व का घात हो	देशचारित्र का घात हो	सकलचारित्र का घात हो	यथाख्यात-चारित्र का घात हो
अनंत संसार (मिथ्यात्व) के साथ संबंध कराये	किंचित् त्याग न होने दे	पूर्ण त्याग न होने दे	जो संयम के साथ प्रज्वलित रहे

9 नोकषाय

जिसके उदय से

- हास्य प्रकट हो → हास्य
- क्षेत्रादिक में उत्सुकता, प्रीति हो → रति
- क्षेत्रादिक में निरुत्सुकता, अप्रीति हो → अरति
- इष्ट-वियोग होने पर क्लेश हो → शोक
- उद्वेग हो → भय

नोकषाय कर्म है ।

9 नोकषाय

जिसके उदय से

अपने दोषों को ढके, अन्य वस्तु के दोष को प्रकटे	स्त्री संबंधी भावों को प्राप्त करे	पुरुष संबंधी भावों को प्राप्त करे	नपुंसक संबंधी भावों को प्राप्त करे
↓	↓	↓	↓
जुगुप्सा	**स्त्रीवेद**	**पुरुषवेद**	**नपुंसकवेद**

नोकषाय कर्म है ।

जिसके उदय से आत्मा

नारक | तिर्यंच | मनुष्य | देव

भव में अवस्थित रहे, वह

नरक | तिर्यंच | मनुष्य | देव

आयु कर्म है ।

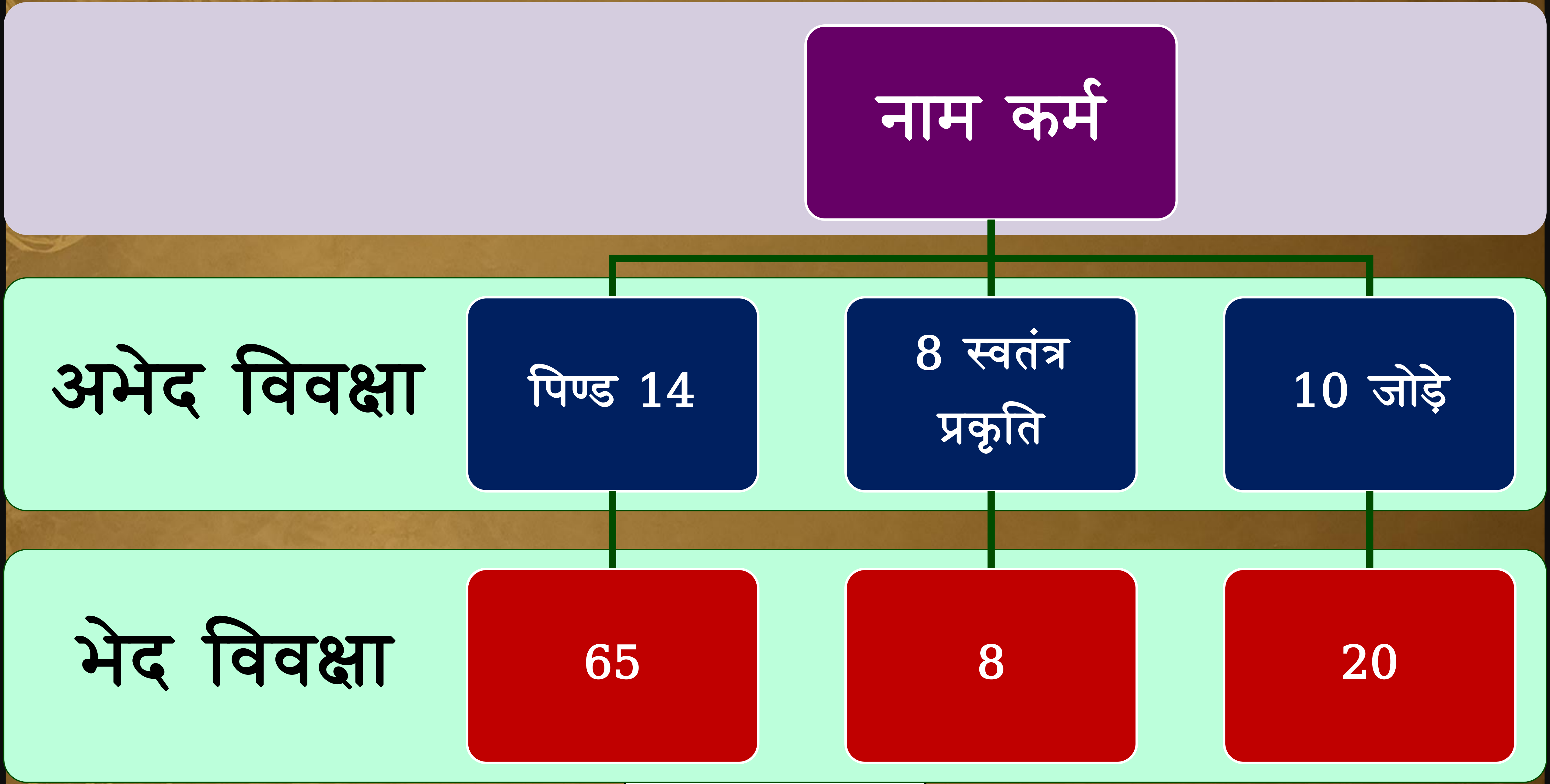

www.JainKosh.org

14 पिंड प्रकृति

गति 4	जाति 5	शरीर 5	बंधन 5	संघात 5
संस्थान 6	अंगोपांग 3	संहनन 6	स्पर्श 8	रस 5
गंध 2	वर्ण 5	आनुपूर्वी 4	विहायोगति 2	

8 स्वतंत्र प्रकृति

अगुरुलघु	उपघात	परघात	आतप
उद्योत	उच्छ्वास	निर्माण	तीर्थंकर

10 जोड़े

1.त्रस – स्थावर	6.शुभ – अशुभ
2.बादर – सूक्ष्म	7.सुभग – दुर्भग
3.पर्याप्त – अपर्याप्त	8.सुस्वर – दुस्वर
4.प्रत्येक – साधारण	9.आदेय – अनादेय
5.स्थिर – अस्थिर	10.यशःकीर्ति – अयशःकीर्ति

गति नामकर्म

जिसके उदय से आत्मा एक भव से भवान्तर को प्राप्त होता है, वह गति नामकर्म है ।

www.JainKosh.org

जिसके उदय से आत्मा को

नारक | तिर्यंच | मनुष्य | देव

पर्याय की प्राप्ति हो, वह

नरक | तिर्यंच | मनुष्य | देव

गति नाम कर्म है।

जाति नामकर्म

गतियों में जिस अव्यभिचारी सादृश्य भाव के द्वारा जीव इकट्ठे किए जाते हैं, उसे जाति कहते हैं ।

यह जाति जिस कर्म के उदय से होती है, उसे जाति नामकर्म कहते हैं ।

जिसके उदय से जीव

- एकेन्द्रिय
- द्वीन्द्रिय
- त्रीन्द्रिय
- चतुरिन्द्रिय
- पंचेन्द्रिय

कहलाता है

वह कर्म

- एकेन्द्रिय जाति कर्म
- द्वीन्द्रिय जाति कर्म
- त्रीन्द्रिय जाति कर्म
- चतुरिन्द्रिय जाति कर्म
- पंचेन्द्रिय जाति कर्म

कहलाता है

www.JainKosh.org

शरीर नामकर्म

जिसके उदय से शरीर
बनता है उसे शरीर
नामकर्म कहते हैं ।

JainKo

जिसके उदय से

औदारिक
वैक्रियिक
आहारक
तैजस
कार्मण

शरीर बनता है, उसे

औदारिक
वैक्रियिक
आहारक
तैजस
कार्मण

शरीर नामकर्म कहते हैं ।

बंधन नामकर्म

जो कर्म-नोकर्म वर्गणाएँ ग्रहण करी,

उनका परस्पर संश्लेष संबंध जिसके उदय से होता है

वह बंधन नामकर्म है ।

जिसके उदय से

औदारिक

वैक्रियिक

आहारक

तैजस

कार्मण

शरीर संबंधी वर्गणाओं का परस्पर संश्लेष संबंध होता है उसे

औदारिक

वैक्रियिक

आहारक

तैजस

कार्मण

बंधन नामकर्म कहते हैं ।

बंधन कर्म के 15 प्रकार

यह बंधन कर्म पाँचों शरीरों के संयोगी भंगों के कारण 15 प्रकार का हो जाता है ।

इसलिए नाम कर्म के भेद 93 भी कहे जाते हैं और जब बंधन के भेद 15 किये जाते हैं तो नाम कर्म के भेद 103 हो जाते हैं ।

तेजाकम्मेहिं तिए, तेजा कम्मेण कम्मणा कम्मं । कयसंजोगे चदुचदु-चदुदुग एक्कं च पयडीओ ॥27॥

- अन्वयार्थ - (तिए) औदारिक, वैक्रियिक और आहारक इन तीनों का (तेजाकम्मेहिं) तैजस और कार्मण के साथ (कयसंजोगे) संयोग करने पर (चदु चदु चदु) चार-चार-चार (पयडीओ) प्रकृतियाँ होती हैं।
- (तेजा कम्मेण) तैजस का कार्मण से संयोग करने पर (दुग) दो प्रकृति होती हैं और (कम्मणा कम्मं) कार्मण के साथ कार्मण का संयोग करने पर (एक्कं) एक प्रकृति होती है ॥27॥

5 शरीर-बंध के संयोगी भंग

प्रधान शरीर	संयोगी शरीर-बंध				योग
औदारिक	औ – औ	औ – तै	औ – का	औ – तै – का	4
वैक्रियिक	वै – वै	वै – तै	वै – का	वै – तै – का	4
आहारक	आ – आ	आ – तै	आ – का	आ – तै – का	4
तैजस	तै – तै	तै – का			2
कार्मण	का – का				1
				कुल	15

www.JainKosh.org

औदारिक शरीर-बंधन के संयोगी भंग

औदारिक शरीर का

- औदारिक शरीर वर्गणाओं से बंध; औदारिक-औदारिक शरीर बंध है ।
- तैजस शरीर से बंध; औदारिक-तैजस शरीर बंध है ।
- कार्मण शरीर से बंध; औदारिक-कार्मण शरीर बंध है ।
- तैजस और कार्मण शरीर से बंध; औदारिक-तैजस- कार्मण शरीर बंध है ।

इसी प्रकार वैक्रियिक और आहारक के भी भंग समझना चाहिए ।

तैजस, कार्मण शरीर-बंधन के संयोगी भंग

तैजस शरीर का

- तैजस शरीर वर्गणाओं से बंध; तैजस-तैजस शरीर बंध है ।
- कार्मण शरीर से बंध; तैजस-कार्मण शरीर बंध है ।

कार्मण शरीर का

- कार्मण शरीर वर्गणाओं से बंध; कार्मण-कार्मण शरीर बंध है ।

संघात नामकर्म

जिसके उदय से

औदारिक आदि शरीर

छिद्ररहित, परस्पर एकक्षेत्रावगाह के द्वारा

एकत्व को प्राप्त होते हैं,

वह संघात नामकर्म है ।

जिसके उदय से

औदारिक

वैक्रियिक

आहारक

तैजस

कार्मण

शरीर छिद्ररहित एकत्व को प्राप्त होता है, वह

औदारिक

वैक्रियिक

आहारक

तैजस

कार्मण

संघात नामकर्म है ।

संस्थान नामकर्म

जिसके उदय से

शरीरों का आकार बनता है,

उसे संस्थान नामकर्म कहते हैं ।

समचतुरस्र

- समान आकार हो

न्यग्रोध परिमंडल

- न्यग्रोध= बड़ का वृक्ष । उसके समान ऊपर से मोटा, नीचे से पतला आकार हो

स्वाति

- स्वाति= साँप की बाम्बी । उसके समान ऊपर से पतला, नीचे से मोटा आकार हो

कुब्जक

- कुबड़ वाला आकार हो

वामन

- ठिगना आकार हो

हुण्डक

- अनेक प्रकार के आकार हो

www.JainKosh.org

णलया बाहू य तहा, णियंबपुट्ठी उरो य सीसो य ।
अट्ठेव दु अंगाइं, देहे सेसा उवंगाइं ॥28॥

- अन्वयार्थ – (णलया) दो पैर (बाहू) दो हाथ (तहा य) तथा (णियंब) नितम्ब - कमर के पीछे का भाग (पुट्ठी) पीठ (उरो य) हृदय (य) और (सीसो) शीर्ष (मस्तक) (अट्ठेव दु) आठ ही (देहे) शरीर में (अंगाइं) अंग हैं ।
- (सेसा) शेष नेत्र, कान आदि (उवंगाइं) उपांग होते हैं ॥28॥

www.JainKosh

शरीर के 8 अंग

- दो पैर
- दो हाथ
- नितम्ब
- पीठ
- हृदय
- मस्तक

उपांग

- अंगुलियाँ
- आँख
- कान आदि

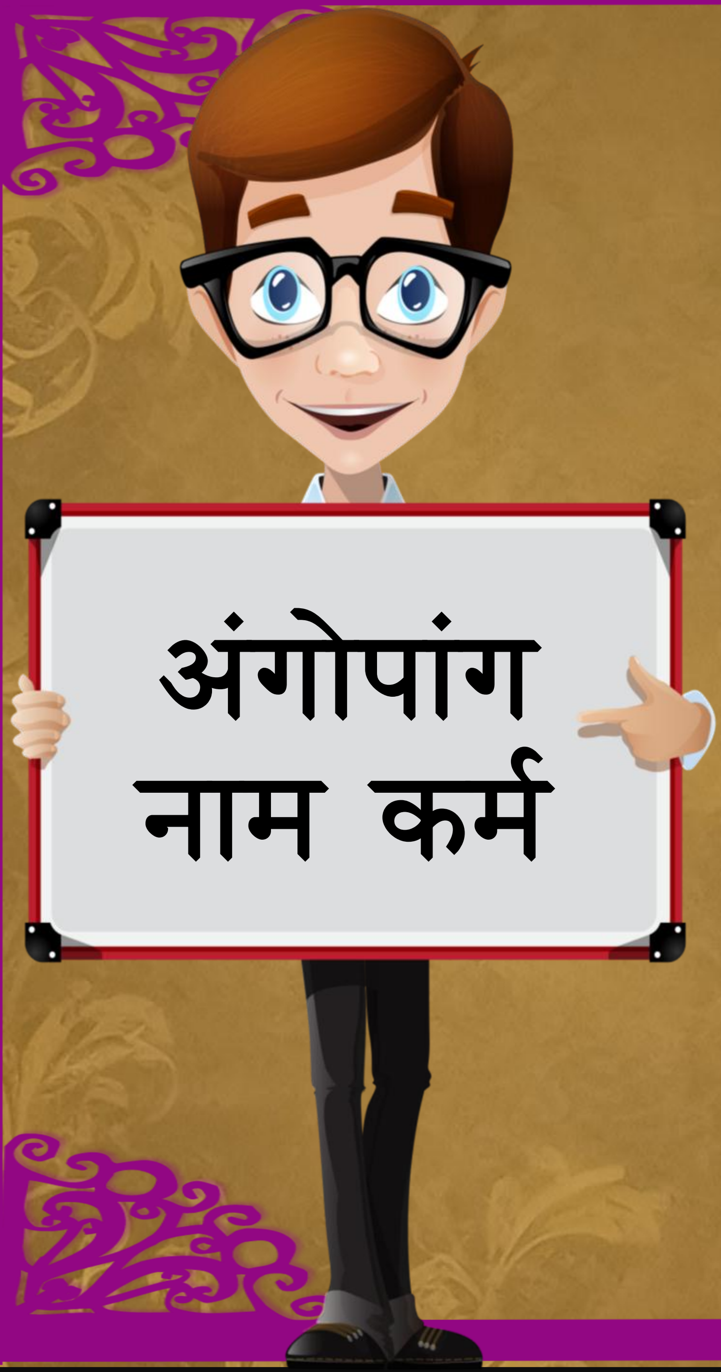

जिसके उदय से अंग और उपांग की रचना होती है, वह अंगोपांग नामकर्म है ।

औदारिक अंगोपांग नामकर्म	• जिसके उदय से औदारिक शरीर के अंगोपांग की रचना होती है।
वैक्रियिक अंगोपांग नामकर्म	• जिसके उदय से वैक्रियिक शरीर के अंगोपांग की रचना होती है।
आहारक अंगोपांग नामकर्म	• जिसके उदय से आहारक शरीर के अंगोपांग की रचना होती है।

तैजस व कार्मण के अंगोपांग नहीं होते क्योंकि उनके हाथ, पाँव आदि अवयवों का अभाव है ।

संहनन नाम कर्म

जिसके उदय से हड्डियों के बंधन में विशेषता होती है, उसे संहनन नामकर्म कहते हैं ।

संहनन	ऋषभ	नाराच
हड्डियों का समूह	जिसके द्वारा बाँधा जाता है	कीली

संहननों का स्वरूप

संहनन	हड्डियाँ	ऋषभ	नाराच
वज्रऋषभनाराच	वज्र	वज्र	वज्र
वज्रनाराच	वज्र	सामान्य	वज्र
नाराच	सामान्य	सामान्य	सामान्य
अर्धनाराच	सामान्य	सामान्य	अर्ध
कीलक	सामान्य	सामान्य	×
असंप्राप्ता-सृपाटिका	सामान्य	×	×

कीलक संहनन

हड्डि; हड्डी से जुड़ी होती है,

ऋषभ से बंधी होती है और

कोई कील हड्डियों को जोड़ती नहीं है ।

जैसा कि इन चित्रों में बताया है ।

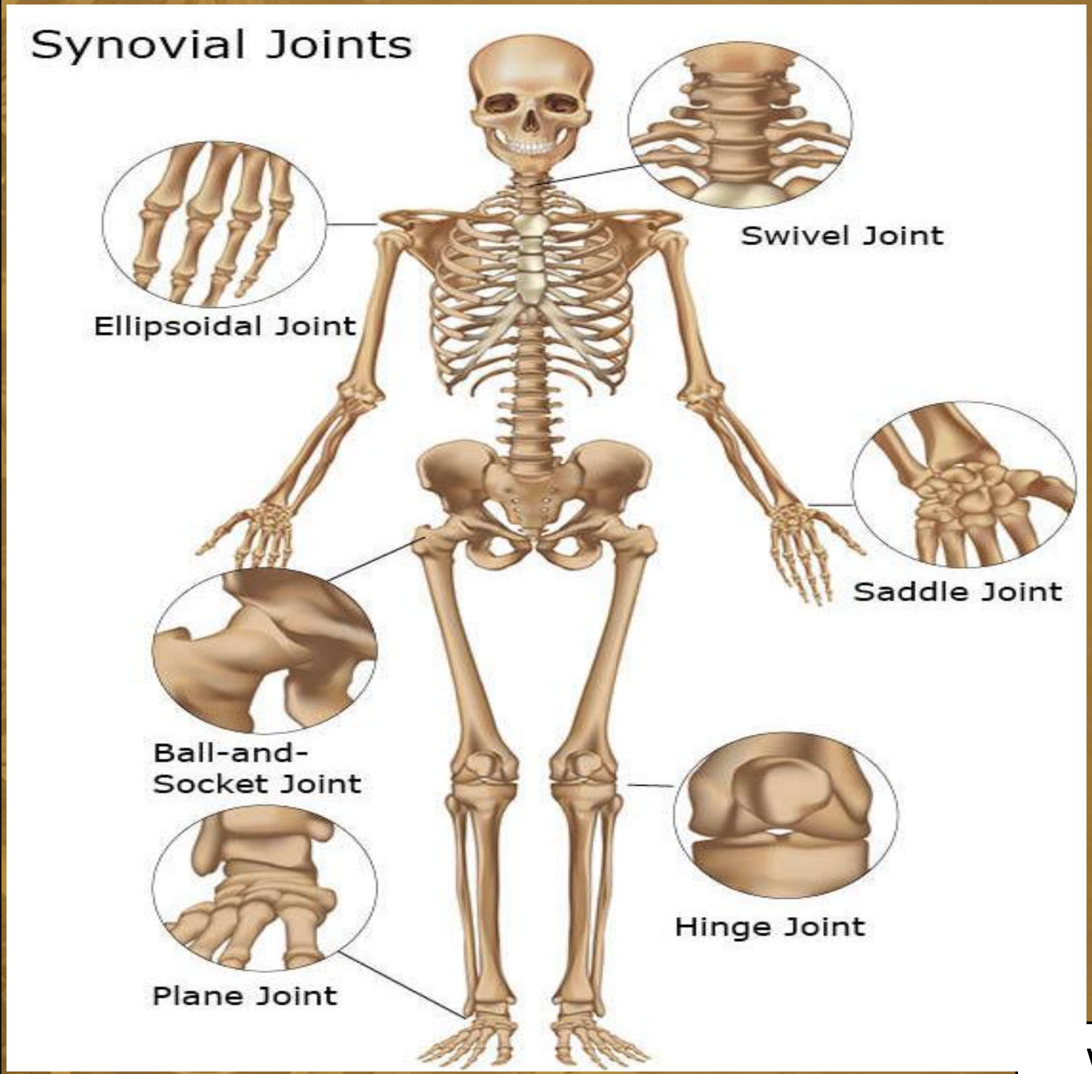

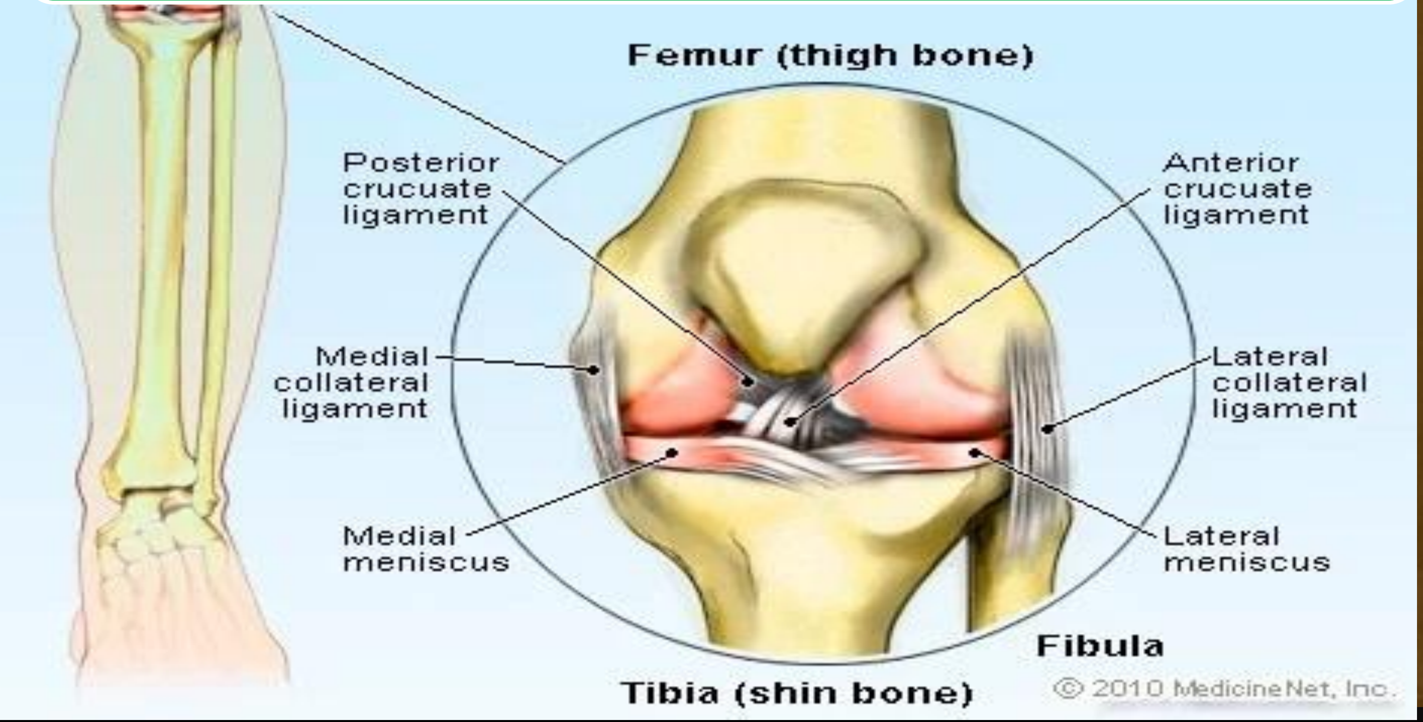

असंप्राप्तासृपाटिका संहनन

सरीसृप की हड्डियों के समान

परस्पर में असंप्राप्त और

नसों से बंधी हुई हड्डियाँ जिसमें हो,

वह असंप्राप्ता-सृपाटिका संहनन कहलाता है ।

सर्प का कंकाल

वर्ण नामकर्म

जिसके उदय से शरीर का वर्ण

- कृष्ण
- नील
- रक्त
- पीत
- श्वेत

होता है, उसे

- कृष्ण
- नील
- रक्त
- पीत
- श्वेत

वर्ण नाम कर्म कहते हैं ।

गंध नामकर्म

जिसके उदय से शरीर में सुरभिरूप गंध होती है, वह सुरभि गंध नामकर्म है ।

जिसके उदय से शरीर में दुरभिरूप गंध होती है, वह दुरभि गंध नामकर्म है ।

रस नामकर्म

जिसके उदय से शरीर का रस

- तिक्त
- कटुक
- कषायला
- अम्ल
- मधुर

होता है, उसे

- तिक्त
- कटुक
- कषायला
- अम्ल
- मधुर

रस नाम कर्म कहते हैं ।

स्पर्श नामकर्म

जिसके उदय से शरीर में

- कर्कश-मृदु
- गुरु-लघु
- स्निग्ध-रूक्ष
- शीत-उष्ण

स्पर्श होता है, उसे

- कर्कश-मृदु
- गुरु-लघु
- स्निग्ध-रूक्ष
- शीत-उष्ण

स्पर्श नाम कर्म कहते हैं ।

www .org

आनुपूर्वी नामकर्म

जिस कर्म के उदय से
विग्रह गति में वर्तमान जीव के
पूर्व शरीर का आकार रहता है,
उसे आनुपूर्वी नामकर्म कहते हैं।

ww.JainKosh.org

नरक-गति-प्रायोग्यानुपूर्वी कर्म	• जिसके उदय से नरक गति को जाते हुए, विग्रह गति में वर्तमान जीव के पंचेन्द्रिय पर्याप्त शरीर का आकार रहता है ।
तिर्यंच-गति-प्रायोग्यानुपूर्वी कर्म	• जिसके उदय से तिर्यंच गति को जाते हुए, विग्रह गति में वर्तमान जीव के पूर्व शरीर का आकार रहता है ।
मनुष्य-गति-प्रायोग्यानुपूर्वी कर्म	• जिसके उदय से मनुष्य गति को जाते हुए, विग्रह गति में वर्तमान जीव के पूर्व शरीर का आकार रहता है ।
देव-गति-प्रायोग्यानुपूर्वी कर्म	• जिसके उदय से देव गति को जाते हुए, विग्रह गति में वर्तमान जीव के पंचेन्द्रिय पर्याप्त शरीर का आकार रहता है ।

www.JainKosh.org

अगुरुलघु नामकर्म

जिस कर्म के उदय से

लोहे के पिण्ड की तरह नीचे नहीं पड़ता,

रुई के समान ऊँचा नहीं उड़ता

वह अगुरुलघु नामकर्म है ।

www.JainKosh.org

उपघात नामकर्म

स्वयं प्राप्त होने वाले घात को उपघात कहते हैं ।

जो कर्म शरीर के अवयवों को जीव की पीड़ा का कारण बना देता है,

अथवा विष, खड्ग, जाल आदि जीव-पीड़ा के कारण-स्वरूप द्रव्यों को जीव से संयुक्त करता है, वह उपघात नामकर्म है ।

पीड़ा देने वाले अवयव — बड़े सींग, लम्बे स्तन, विशाल तोंद वाला पेट आदि

परघात नामकर्म

जिस कर्म के उदय से शरीर में

पर को घात करने में कारणभूत

पुद्गल निष्पन्न होते हैं

वह परघात नामकर्म है ।

जैसे — दांत में विष, बिच्छू की पूँछ में विष, तीक्ष्ण नख-दाँत, विषैले वृक्ष आदि

उच्छ्वास नामकर्म

जिसके उदय से श्वास-उच्छ्वास होता है, वह उच्छ्वास नामकर्म है ।

आतप नामकर्म

जिसके उदय से आतपरूप शरीर बने वह आतप नामकर्म है ।

इसका उदय सूर्य-विमान में स्थित बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्त जीवों के ही होता है ।

उद्योत नामकर्म

जिसके उदय से उद्योतरूप शरीर बने, उसे उद्योत नामकर्म कहते है ।

इसका उदय चंद्रबिम्ब, जुगनू आदि तिर्यंचों में ही होता है ।

विहायोगति नामकर्म

1. प्रशस्त गमन = प्रशस्त विहायोगति
2. अप्रशस्त गमन = अप्रशस्त विहायोगति

विहायस् + गति

आकाश में + गमन = विहायोगति

जिस कर्म के उदय से जीव का आकाश में गमन होता है, वह विहायोगति कर्म है ।

* आकाश का तात्पर्य नभमण्डल नहीं है, बल्कि आकाश द्रव्य से है ।

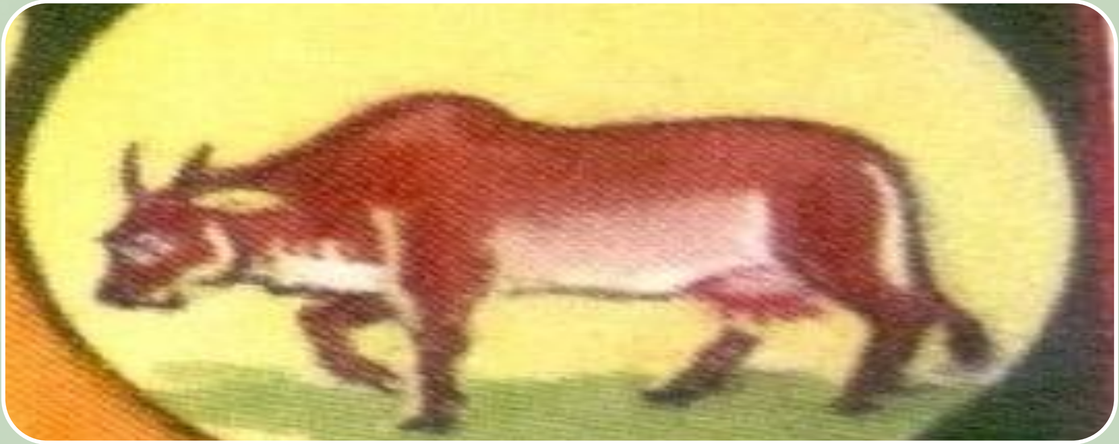

त्रस नामकर्म

- जिस कर्म के उदय से जीवों के त्रसपना होता है, उसे त्रस नामकर्म कहते हैं

स्थावर नामकर्म

- जिस कर्म के उदय से जीवों के स्थावरपना होता है, उसे स्थावर नामकर्म कहते हैं

बादर नामकर्म

जिस कर्म के उदय से

दूसरों को रोके, दूसरों से रुके,

ऐसा शरीर बने,

उसे बादर नामकर्म कहते हैं ।

सूक्ष्म नामकर्म

जिस कर्म के उदय से

किसी को रोके नहीं, किसी से रुके नहीं,

ऐसा शरीर बने,

उसे सूक्ष्म नामकर्म कहते हैं

www.JainKosh.org

पर्याप्त नामकर्म

जिस कर्म के उदय से

आहार आदि पर्याप्तियाँ

पूर्ण होती हैं

वह पर्याप्त नामकर्म है ।

अपर्याप्त नामकर्म

जिस कर्म के उदय से

आहार आदि पर्याप्तियाँ

पूर्ण नहीं होती हैं

वह अपर्याप्त नामकर्म है ।

w.JainKosh.

प्रत्येक नामकर्म

जिस कर्म के उदय से

एक शरीर

एक आत्मा के उपभोग का कारण हो,

वह प्रत्येक नामकर्म है ।

साधारण नामकर्म

जिस कर्म के उदय से

एक शरीर

अनेक आत्माओं के उपभोग का कारण हो,

वह साधारण नामकर्म है ।

स्थिर नामकर्म

जिस कर्म के उदय से रसादिक धातु, उपधातुओं का अविनाश, अगलन हो वह स्थिर नामकर्म है ।

अस्थिर नामकर्म

जिस कर्म के उदय से रसादिक धातु, उपधातुओं का क्रम से परिणमन (विनाश, बदलाव) हो वह अस्थिर नामकर्म है ।

7 धातु-उपधातु

धातु

- रस, रक्त, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा, शुक्र

उपधातु

- वात, पित्त, कफ, सिरा, स्नायु, चर्म, उदराग्नि

शुभ नामकर्म

जिस कर्म के उदय से अंग-उपांगों में मनोज्ञता (रमणीयता) होती है वह शुभ नामकर्म है ।

अशुभ नामकर्म

जिस कर्म के उदय से अंग-उपांगों में अशुभता (अमनोज्ञता) होती है वह अशुभ नामकर्म है ।

सुभग नामकर्म

जिसके उदय से अन्य जीवों को प्रीतिकर लगे, वह सुभग नामकर्म है ।

दुर्भग नामकर्म

जिसके उदय से अन्य जीवों को अप्रीतिकर लगे, वह दुर्भग नामकर्म है ।

सुस्वर नामकर्म

दुःस्वर नामकर्म

जिसके उदय से मधुर स्वर उत्पन्न हो, वह सुस्वर नामकर्म है ।

जिसके उदय से बुरा स्वर उत्पन्न हो, वह दुःस्वर नामकर्म है ।

आदेय नामकर्म

जिसके उदय से प्रभा (कांति) सहित शरीर उत्पन्न हो,

वह आदेय नामकर्म है ।

अनादेय नामकर्म

जिसके उदय से प्रभा (कांति) रहित शरीर उत्पन्न हो,

वह अनादेय नामकर्म है ।

आदेय — ग्रहणीयता, बहुमान्यता ।
जिसके उदय से जीव की बहु-मान्यता हो, वह आदेय कर्म है ।
इसके विपरीत अनादेय कर्म है । — धवल 6 ।

यशस्कीर्ति नामकर्म

अयशस्कीर्ति नामकर्म

यश = गुण । कीर्ति = उद्भावन, प्रकटीकरण । (धवला पु. 6)

यशस्कीर्ति = गुणों का प्रकटीकरण

अयशस्कीर्ति = अवगुणों का प्रकटीकरण

जिसके उदय से विद्यमान गुणों का प्रकटीकरण, ख्यापन, प्रसिद्धि हो, वह यशस्कीर्ति कर्म है ।

जिसके उदय से अविद्यमान अवगुणों का प्रकटीकरण, ख्यापन, प्रसिद्धि हो, वह अयशस्कीर्ति कर्म है ।

...ainKos...

निर्माण = नियत मान

प्रमाण

नेत्रादिक जितने विस्तार-आयाम वाले होने चाहिए,

उतने प्रमाण में ही होना

(काल, जाति के अनुरूप)

संस्थान (स्थान)

नेत्रादिक जिस स्थान पर होने चाहिए,

उस ही स्थान होना ।

(जाति के अनुरूप)

जिस कर्म के उदय से दोनों प्रकार के निर्माण होते हैं, वह निर्माण नामकर्म है ।

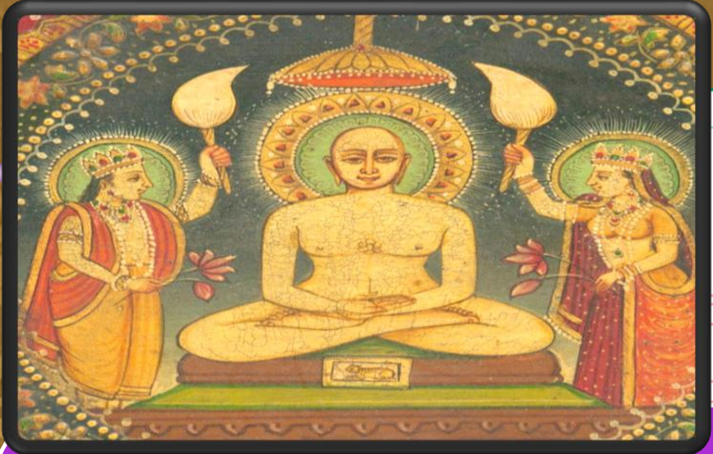

तीर्थंकर नामकर्म

सर्वार्थसिद्धि

- श्रीमन्त अर्हन्त पद को कारणभूत तीर्थंकर नामकर्म है ।

धवल

- जिस कर्म के उदय से जीव की त्रिलोक में पूजा होती है, वह तीर्थंकर नामकर्म है ।

उच्च-गोत्र कर्म

जिस कर्म के उदय से

लोकपूजित कुल में

जन्म हो,

वह उच्च गोत्र कर्म है ।

नीच गोत्र कर्म

जिस कर्म के उदय से

लोकनिंदित कुल में

जन्म हो,

वह नीच गोत्र कर्म है ।

ww.JainKo

जिस कर्म के उदय से

दान
लाभ
भोग
उपभोग
वीर्य

में विघ्न होता है, उसे

दानांतराय
लाभांतराय
भोगांतराय
उपभोगांतराय
वीर्यांतराय

कर्म कहते हैं ।